गांव में लौटना स्मृतियों में लौटना है

यह जो हमारे गांव के
नये नये जवान लड़के हैं
अभी-अभी ठीक से
जवानी की दहलीज पर
कदम भी नहीं रखे हैं कि
अभी से ही उड़ने लगे हैं हवा में

दिन भर गांव में इधर-उधर
मटरगस्ती करने वाले
इन लड़कों को पता नहीं है अभी
दाल आटे का भाव

मोबाइल की स्क्रीन पर
दिन रात उंगलियां नाचते
ये लड़के भाग रहे हैं
सिर्फ सपनों की दुनिया में

दुनिया की अंधी दौड़ में
शामिल हमारे गांव के लड़के
अब नहीं रहना चाहते गांव में
जाना चाहते हैं दूर बहुत दूर

इन नये-नये जवान लड़कों को
अब गांव अच्छा नहीं लगता
कहते हैं अब गांव में क्या रखा है

जब देखो
शहरों की चकाचौंध में खोये रहते हैं
और अक्सर बड़ी बड़ी बातें करते उड़ाते है

गांव वालों का मजाक

पर उन्हें क्या पता
जिस गांव को छोड़कर
जाना चाहते हैं वे शहर
उस शहर की आत्मा में भी
बसा होता है कहीं न कहीं एक गांव

गांव से शहर है
या शहर से गांव
इस पर मैं किसी से कोई
बहस नहीं करना चाहता

बस इतना भर कहना चाहता हूं
कि पहले गांव बना तब शहर

गांव है तो शुद्ध हवा है पानी है
खेत है खलिहान है
बाग बगीचे हैं
खुला आंगन है
खुले खुले हरे भरे मैदान हैं

यह जो ऊंची ऊंची इमारतों वाला शहर है
अपनी अकड़ के साथ खड़ा
यहां तक कि वह भी टिका है
गांव की ही बदौलत

इसलिए हे मेरे गांव के
नये-नये लड़के
शहर का सपना देखना
पर सपनों की अंधी दुनिया में
किसी के पीछे मत भागना

याद रखना कि
तुम्हारे गांव की मिट्टी में मौजूद है
तुम्हारे पूर्वजों की जड़ें
इसलिए अपनी जड़ों को
बचाये रखना

अपने गांव से उखड़ना
अपनी दुनिया से उखड़ना है

इसलिए जहां भी जाना
थोड़ा अपने साथ
अपने गांव को भी ले जाना
और हो सके तो बार-बार लौट के अपने गांव को आना।

कि वह तुम्हारा गांव ही है
जहां की मिट्टी में
जुड़ी हैं तुम्हारी स्मृतियां

याद रखना कि गांव में लौटना
अपनी स्मृतियों में लौटना है।

तेज नारायण राय